सवाल जब जब, जवाब तब तब!

देवकी नंदन

पाठक मित्रों, विज्ञान के नज़रिये से यह माह यानी नवंबर हम भारतीयों के लिए वरदान समान सिद्ध हुआ है। इसी महीने सारी दुनिया में भारतीय परचम लहराने वाले हमारे महान वैज्ञानिक रामन (1888), सालिम अली (1896), बीरबल साहनी (1891), पंचानन महेश्वरी (1904), जगदीशचंद्र बोस (1858), मिल्क मैन ऑफ इंडिया वर्गीस कुरियन (1921) तथा आज़ाद भारत में विज्ञान की पक्की नींव रखने वाले हमारे प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू (1889) जैसे अति विशिष्ट व्यक्ति जन्मे। स्वतंत्र भारत का पहला डाक टिकट भी इसी महीने (1947) जारी हुआ तो थुंबा से पहला प्रक्षेपण (1963) भी इसी महीने हुआ था। चितरंजन रेल कारखाने से पहला रेल इंजन (1950) भी इसी माह के पहले दिन अवतरित हुआ था। इसी महीने कल्पना चावला एशिया मूल की पहली अंतरिक्षयात्री (1997) बनीं तो इसी माह एशिया चेचकमुक्त घोषित (1975) किया गया। रामन एवं बोस रिसर्च इंस्टीट्यूट सहित कई संस्थान भी इसी माह जन्मे। सच तो यह है कि स्थानाभाव के कारण इस माह की पूरी भारतीय उपलब्धियों को गिना पाना असंभव है। हाँ, 'सवाल जब जब, जवाब तब तब' की इस ताज़ा किश्त में हमने हमारी श्वेत क्राँति के जनक डॉ. वर्गीस कुरियन को प्यार से याद किया है। साथ ही गॉड पार्टिकल की साझा खोज में भारतीय योगदान की चर्चा भी की है। भारत को ही लेकर असम की मशहूर जातिंगा घाटी का ज़िक्र किया है तो भारतीय रेलों में बढ़ती अवैज्ञानिक भीड़ का नक्शा भी खींचा है। कुल मिलाकर इस ताज़ा-तरीन किश्त में भारत पर ख़ूब फ़ोकस है पर देखना यह है कि आप अपने देश को कितना जानते हैं। कृपया प्रतिक्रिया अवश्य दें, धन्यवाद!

• **प्रश्न 1 :** आज हर पल नदियों-सागरों-महासागरों की छाती चीरते हुए अनेकानेक मालवाहक जहाज विविध प्रकार के ज़रूरी सामान एक स्थान (या देश) से दूसरे स्थान (या देश) ले जा रहे हैं। किसी जहाज़ विशेष में कुल कितना सामान सुरक्षा से लादा जाए, क्या इसकी कोई सीमा रेखा है?

• **उत्तर :** जी हाँ, इस सीमा रेखा को भार रेखा, लोड लाइन या फिर इंटरनेशनल प्लिमसोल (Plimsoll) लाइन भी कहते हैं। यह लाइन जहाज़ के खोल (Hull) पर बनी रहती है जिससे आशय यह है कि माल उतना ही लादा जाए कि जहाज़ पानी में इस रेखा के कुछ नीचे ही रहे, ऊपर नहीं। इस प्रकार प्लिमसोल लाइन दरअसल जहाज़ के लिए 'सुरक्षा-भार-लाइन' का काम करती है। मज़े की बात है कि हर जहाज़ पर कई प्लिमसोल लाइनें होती हैं।

क्यों? दरअसल अलग-अलग प्रकार के जल (नदी के मीठे जल, सागर के खारे जल, गर्म जल, आर्कटिक के ठंडे जल आदि) में प्रचालन के लिए अलग-अलग भारों की गणना की जाती है। 19वीं सदी में ब्रिटिश संसद सदस्य सैमुअल प्लिमसोल ने जहाज पर सुरक्षित भार का मुद्दा सबसे पहले उठाया था जिस कारण एक आयोग ने इस समस्या का पूरा वैज्ञानिक विश्लेषण कर प्लिमसोल-लाइन रूपी समाधान निकाला था।

• **प्रश्न 2 :** बच्चा चाहने वाली और गर्भधारी दोनों ही महिलाओं को धूम्रपान न करने की वैज्ञानिक सलाह दी जाती है, है न? तो क्या बच्चा चाहने वाले पुरुष को धूम्रपान की अनुमति है?

• **उत्तर :** धूम्रपान शैतान द्वारा दिया वरदान है। सिगरेट भले ही एक नन्हीं-खूबसूरत-श्वेताम्बरी लगे पर इसमें अनेक ज़हरीले रसायन छिपे हैं जोकि सिगरेट पीने वाले व्यक्ति को ही नहीं, उसके पूरे परिवार को प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप में अपने लपेटे में ले लेते हैं। अब बच्चा चाहने वाले पुरुष की बात करें तो इंग्लैंड की यूनीवर्सिटी ऑफ़ ब्रेनफोर्ड की हालिया रिसर्च उन्हें भी कड़ी चेतावनी दे रही है। इसके मुताबिक बच्चा पैदा करने का निर्णय लेने से तीन महीने पहले से ही ऐसे पुरुषों को सिगरेट का संपूर्ण त्याग कर देना चाहिये। कारण? सिगरेट के विषैले रसायन अगली पीढ़ी को क्षतिग्रस्त डीएनए प्रदान करते हैं। अब क्योंकि एक 'फ़र्टाइल स्पर्म कोशिका' के पूरे विकास में करीब तीन महीने का वक्त लगता है, अतः संतान के इच्छुक पुरुष को पत्नी के गर्भधारण से तीन माह पहले ही सिगरेट छोड़ देनी चाहिए। और हाँ, इसके बाद जीवन भर कभी सिगरेट नहीं पीनी है, यह बात भी कृपया याद रखें। आपको याद होगा कि सिगरेट के अन्यान्य दुर्गुणों के कारण 2 अक्तूबर, 2008 से देश भर में सार्वजनिक स्थलों पर धूम्रपान कानूनी रूप से बंद कर दिया गया है।

• **प्रश्न 3 :** 'ALICE-33-118-INDIA-DAE-DST-10-70' क्या आप इस सच्ची पहेली को सुलझा सकते हैं, कोशिश तो कीजिए? चलिए इतना भी बताए देते हैं कि ALICE का अर्थ है A Large Ion Collider Experiment यानी वही महाप्रयोग जो Higgs Boson (गॉड पार्टिकल) की खोज से जुड़ा है। तो अब जल्द सुलझाइए यह पहेली!

• **उत्तर :** विज्ञान प्रगति के इस स्तंभ में हम दो बार इस महाप्रयोग तथा गॉड पार्टिकल की चर्चा पहले ही कर चुके हैं जिसे Large Hadron Collider Experiment भी कहा गया है, याद है न? तो अब उपरोक्त पहेली का अर्थ यह है कि इस महाप्रयोग में 33 देशों के 118 संस्थान सहयोग कर रहे हैं। इसमें भारतीय योगदान

उल्लेखनीय स्तर का है जिसका संचालन परमाणु ऊर्जा विभाग (DAE) तथा विज्ञान एवं तकनीकी विभाग (DST) के ज्वाइंट समर्थन एवं निर्देश में किया जा रहा है। भारत के कुल 10 संस्थानों के 70 वैज्ञानिक दुनिया के इस सबसे बड़े प्रयोग में बरसों से लगे हैं। ये दस भारतीय संस्थान हैं आईआईटी (मुंबई), बोस इंस्टीट्यूट (कोलकाता), परिवर्ती ऊर्जा साइक्लोट्रॉन केंद्र (कोलकाता), साहा इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूक्लियर फ़िज़िक्स (कोलकाता), जम्मू विश्वविद्यालय (जम्मू), राजस्थान विश्वविद्यालय (जयपुर), गुवाहाटी विश्वविद्यालय (गुवाहाटी), पंजाब विश्वविद्यालय (चंडीगढ़), इंस्टीट्यूट ऑफ फिजिक्स (भुवनेश्वर) तथा अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय (अलीगढ़)। बता दें कि अब इसके स्थान पर 80 किलोमीटर परिधि जितना लंबा कोलाइडर बनाने पर सक्रिय विचार चल रहा है।

• **प्रश्न 4 :** आजकल वॉक-इन-इंटरव्यूज़ का रिवाज क्यों चल पड़ा है? क्या इस तरह के साक्षात्कार के लिए कुछ अलग तैयारी करनी पड़ती है?

• **उत्तर :** कई कंपनियाँ जब बड़ी संख्या में भरती करना चाहती हैं तो समय व धन बचाने के लिए वॉक-इन-इंटरव्यूज़ का इंतज़ाम करती हैं। यदि आप इस साक्षात्कार के लिए जाना चाहते हैं तो शीघ्रातिशीघ्र पहुँचिए क्योंकि इन इंटरव्यूज़ में 'पहले आओ, पहले पाओ' नीति अपनाई जाती है। मसलन अगर विज्ञापन में बताया गया है कि ये इंटरव्यूज़ तीन दिन तक चलेंगे, मगर कंपनी को उचित लोग दो ही दिन में मिल गए तो तीसरे दिन पहुँचने वालों को 'जॉब' नहीं, निराशा हाथ लगेगी। हाँ, ऐसे इंटरव्यूज़ के लिए आपको तैयारी के लिए पर्याप्त समय नहीं मिलता, मगर आत्मविश्वास की डोर पकड़े रहें। जाने से पहले कंपनी की वेबसाईट पर भी नज़र डाल लें। और हाँ, इसके लिए ढंग के कपड़े,

संवाद की स्पष्टता, सही बॉडी लैंग्वेज तथा ज़रूरी कागज़ात की मौजूदगी भी मददगार सिद्ध होते हैं। काम की बातों के बाद अक्सर यह भी पूछ लिया जाता है कि आप के कमज़ोर प्वाइंट्स क्या हैं तो 'मैं आदर्शवादी हूँ, 'मैं परफेक्शनिस्ट हूँ', 'मैं वर्कोहोलिक हूँ' जैसे घिसे-पिटे उत्तरों के बजाए आप कह सकते हैं: 'I am easily satisfied with the very best work' (यह चर्चिल कहा करते थे), 'I am more flexible than principled' जैसी सकारात्मक कमज़ोरियाँ बता सकते हैं। कमज़ोरी को कमी की तरह पेश न करें, प्लीज़!

• **प्रश्न 5 :** 91 वर्ष पहले इसी नवंबर माह की 26 तारीख को जन्मे भारत में 'ऑपरेशन फ़्लड' के जरिये दूध की नदियाँ पैदा करने वाले श्वेत क्राँति के जनक डॉ. वर्गीस कुरियन इस वर्ष 9 सितंबर के दिन अचानक दिवंगत हो गए। उन्हें मिल्क मैन ऑफ इंडिया तथा 'अमूल मैन' भी कहा जाता है, है न? आज AMUL एक वैश्विक ब्राँड है जिसके तहत अनेक उत्पाद बने। हमारा सरल सा प्रश्न इस संबंध में यह है कि AMUL शब्द का विस्तारित नाम क्या है?

• **उत्तर :** एशिया के सबसे बड़े दूध संयंत्र यानी अमूल प्लांट का उद्घाटन सन् 1955 में प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू जी ने किया था। इस प्लांट में कुरियन ने भैंस के दूध का पाउडर तैयार कर सबको चकित कर दिया

था। बहरहाल उपरोक्त प्रश्न का उत्तर है : Amul यानी Anand Milk Union Limited, सरल सा मामला था न?

• **प्रश्न 6 :** चीन के बेंक्सी (Benxi) शहर को दुनिया का कोई भी उपग्रह आज तक नहीं देख पाया। अख़िर इसकी वजह क्या है?

• **उत्तर :** इसकी वजह बहुत सिंपल है। बेंक्सी शहर में फ़ैक्टरियों द्वारा छोड़े धुएं की मात्रा इतनी अधिक है कि सेटेलाइट के कैमरे इस धुएं को भेद नहीं पाते।

माईल्स कैली (Miles Kelly) लिखित '8000 थिंग्स यू शुड नो' में तो यही लिखा है।

• **प्रश्न 7 :** इस वर्ष लंदन में आयोजित ओलंपिक खेलों के दौरान कई नए इतिहास रचे गए। हमारा सवाल यह है कि इस ओलंपिक-2012 के दौरान आपकी नज़र में सबसे ज़्यादा अचरजकारी व हर्षकारी इतिहास क्या रचा गया?

• **उत्तर :** हर ओलंपिक यूँ तो विभिन्न खेल संबंधी व मानवीय इतिहास रचता है परंतु लंदन के इस तीसरे ओलंपिक आयोजन में जो

सबसे हर्ष और विस्मय पैदा करने वाला इतिहास रचा गया, वह हमारी नज़र में यह है कि इस बार हिस्सा लेने वाले 200 से भी अधिक दुनिया के देशों के खिलाड़ी दलों में महिलायें भी शामिल थीं। एक समय था जब

किसी-किसी देश के खिलाड़ी दल में एक भी महिला खिलाड़ी नहीं होती थी बल्कि यह क्षेत्र महिलाओं के लिए एक निषिद्ध क्षेत्र था। बहरहाल पिछले 116 वर्ष के ओलंपिक के इतिहास में धीरे-धीरे महिलाओं का

प्रवेश बढ़ता गया है। मगर इस वर्ष पहली बार हर देश ने अपने खिलाड़ी दल में महिलाओं को भी शामिल किया। क्या यह सबसे रोमांचक और उल्लासकारी इतिहास नहीं है? यदि इस ओलंपिक की इससे भी बड़ी कोई ऐसी उपलब्धि है तो कृपया हमें अवश्य बतायें!

• **प्रश्न 8 :** हमें पता है कि ब्लू ह्वेल (लंबाई 80-110 फुट तक; वज़न 150-170 टन तक) हमारी दुनिया की सबसे बड़ी मछली है, है न? पर सबसे छोटी मछली का क्या नाम है?

• **उत्तर :** ब्लू ह्वेल को मछली के बजाय दुनिया का सबसे बड़ा जानवर कहें तो बेहतर होगा। बहरहाल 21,000 मत्स्य स्पीशीज़ में सबसे छोटी है 8 मिलीमीटर लंबाई वाली पिग्मी गोबी (Pigmy Goby) जो फिलीपींस में पाई जाती है।

• **प्रश्न 9 :** हमें पता है कि मूत्र या पेशाब हमारे शरीर द्वारा त्यागा गया व्यर्थ पदार्थ है जोकि अमोनिया जैसे रसायनों के कारण दुर्गंध छोड़ता है। इतना तो बताइए कि जीवन भर में आप कुल कितना मूत्र त्याग करते हैं?

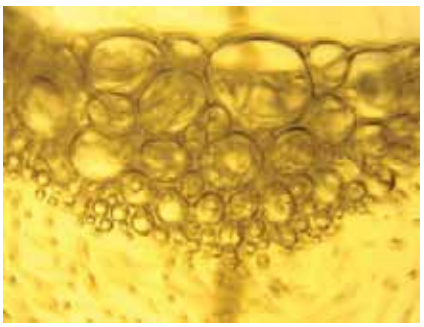

• **उत्तर :** औसतन करीब 45,000 लीटर, यानी एक बड़े स्विमिंग पूल जितना। क्या यह काफ़ी नहीं?

• **प्रश्न 10 :** सुना है कि रसायनशास्त्र के जनक लेवॉइज़ियर को अभियुक्त करार देकर गिलोटीन से उनका गला काट दिया गया था, क्या यह सही है?

• **उत्तर :** हाँ, सही है। संहति के संरक्षण के नियम का प्रतिपादन करने वाले ऑक्सीजन के सहखोजी लेवॉइज़ियर को फ्रेंच-रेवॉल्यूशन का अभियुक्त बनाया गया था। न्यायाधीश को जब बताया गया कि वे महान वैज्ञानिक हैं तो उसने कहा था, 'फ्राँस को वैज्ञानिकों की क्या जरूरत?' लेवॉइज़ियर के बलिदान पर लाग्रांज ने कहा था कि जो सिर पल में अलग किया, उसे पैदा करने में फ्राँस को सैकड़ों साल लगेंगे।

• **प्रश्न 11 :** पिछले 2-3 दशकों के दौरान अनेकानेक भारतीय युवा पुरुषों का वीर्य लगातार कमज़ोर हुआ है। केवल वीर्य की मात्रा ही नहीं बल्कि इसमें मौजूद शुक्राणुओं (Sperms) की क्वालिटी व संख्या सभी में कमी आयी है। नतीजा? अनेक युवा दंपत्तियों को संतान सुख प्राप्त नहीं हो पा रहा। सवाल आपसे यह है कि आप कृपया वीर्य की इस कमज़ोरी का कारण तो बताइए जोकि युवा भारतीयों में किसी हद तक आंशका और निराशा फैला रहा है?

• **उत्तर :** हाँ, इस कमज़ोरी की पुष्टि अनेक डॉक्टरों व अनुसंधानकर्त्ताओं ने की है। सच तो यह है कि किसी हद तक यह वैश्विक समस्या है क्योंकि इसके कारण विश्वव्यापी हैं। तो अब आप कारण जानना चाहते हैं, है न? आजकल की स्ट्रेस-भरी जीवनशैली तो है ही, प्रदूषण द्वारा जल, वायु एवं भोजन में फैले रसायनों की भी इस कमज़ोरी में ख़ास भूमिका है। और हाँ, वातावरण में बढ़ती गर्मी की भी विशेष भूमिका है क्योंकि पुरुष जननांग इस गर्मी के प्रति बहुत ही संवेदनशील होते हैं जिस कारण उन युवाओं में यह समस्या अधिक है जो गरम माहौल वाली मिलों-फैक्टरियों में काम करते हैं। कुल मिला कर संतानोत्पादक उम्र के करीब 40% लोग इस समस्या के शिकार हैं। तो ज़ाहिर है कि उल्लेखनीय रूप से स्पर्म-काउंट तथा स्पर्म-क्वॉलिटी गिरने से संतान पैदा न कर पाने की वजह से ऐसे जोड़े निराश तो होंगे ही। संतोष की बात है कि पिछले दशकों में विज्ञान की प्रगति से इन युवाओं के लिए संतान प्राप्ति के कुछ अन्य मार्ग भी खुले हैं। ऐसे युवाओं के लिए विज्ञान की सलाह यह भी है कि ज़्यादा गरम पानी से न नहाया करें तथा दैनिक भोजन में रोज-दो अखरोट भी शामिल कर लें।

• **प्रश्न 12 :** यहाँ नीचे 5 मशहूर यूरोपियन अन्वेषकों तथा 5 ही देशों के नाम दिए गए हैं। अब आप बस इन अन्वेषकों तथा देशों के नामों का मिलान कर दीजिए और हमारी शाबासी पाइए। अन्वेषकों के नाम के आगे ब्रैकेट में वे ईस्वी वर्ष भी दिए गए हैं जब ये अन्वेषक इन देशों में पहुँचे, ताकि आपको कुछ अतिरिक्त सुविधा हो। नाम इस प्रकार हैं -

अन्वेषक : मार्को पोलो (1272); कोलंबस (1492); सेंट फ्राँसिस ज़ेवियर (1549); ऑबेल तस्मान (1642) तथा वास्को डा गामा (1498)।

देश : हिंदुस्तान; चीन; अमेरिका; जापान तथा न्यूज़ीलैंड

• **उत्तर :** वास्को डा गामा और हिंदुस्तान का रिश्ता उतना ही मशहूर है जितना कोलंबस और अमरीका का, है न? और हाँ, मार्को पोलो की चीनी कहानियाँ भी लोकप्रिय हैं। सेंट ज़ेवियर ने जापान और आबेल तस्मान ने न्यूज़ीलैंड का अन्वेषण किया, बस इतना जानना ही बाकी था न?

• **प्रश्न 13 :** चलती रेलगाड़ी से नीचे गिरते समय तथा गिरने के बाद कैसा महसूस होता है?

• **उत्तर :** सवाल अजीब सा है न? न आप गिरे न हम, तो चलती रेलगाड़ी से गिरने का अहसास कौन बयाँ करे? लेकिन इस सवाल का जवाब है हमारे पास।

कैसे? मुंबई के एक अख़बार के रिपोर्टर दीपक लोखंडे के साथ जब यही हुआ तो ज़ाहिर है कि उनके अख़बार ने कुछ ही दिन बाद उनकी आपबीती के ज़रिये उपरोक्त सवाल का जवाब इस प्रकार दिया, 'एक हाथ में गीला छाता, दूसरे में बैग लिये मैं किसी तरह बोरिवली लोकल में घुस तो गया परंतु.... कुछ समय बाद न जाने क्यों लगा कि मैं ट्रेन से नीचे की ओर रुख कर रहा हूँ ..... स्लो मोशन में ..... फिर धड़ाम ....मेरे हाथ खून में सने थे.... मैं चिल्लाया पर

आवाज़ न निकली.....शायद मेरा जबड़ा .....? मैंने उठने की कोशिश की मगर मेरी हालत धुत्त शराबी जैसी थी..... आसपास के खंभों की रोशनी ऐसी लग रही थी जैसे चाँद-सितारों से आ रही हो। फिर.....जैसे तैसे मैं उठा.....हाथों में जबड़ा थामे। माटुंगा स्टेशन. ..... पुलिस की मदद....अस्पताल। होश आया तो असहनीय दर्द.....फिर भी मैंने इशारों में डॉक्टर को कहा.....अपना काम करो, मैं बचूँगा.....जरूर बचूँगा।।'

• **प्रश्न 14 :** असम की डेढ़ किलोमीटर लंबी और केवल 200 मीटर चौड़ी जातिंगा घाटी पक्षियों के सामूहिक विनाश अथवा आत्महत्या के कारणों से बरसों से चर्चा में है। कहा जाता है कि कुछेक हज़ार की आदिवासी आबादी वाले इस क्षेत्र में सितंबर-अक्तूबर माह की अंधेरी रातों में इस इलाके में प्रकाश फैलाने वाले स्रोतों पर तरह-तरह के सैकड़ों स्थानीय पक्षी आकर मर मिटते हैं। क्या आपने इस बारे में सुना है और आपको पता है कि ऐसा क्यों होता है?

• **उत्तर :** जी हाँ, हमने भी पढ़ा और सुना है कि मौसम-वायु गति-मद्धिम प्रकाश-बारिश के मौसम आदि के विशेष कांबीनेशन के दौरान उत्तर दिशा से बगुला-मैना-फाख़्ता-कोयल-कबूतर-हुडेड पित्ता-जलमुर्गी आदि विविध पक्षी रात के समय सैकड़ों की संख्या में आकर्षित हो उड़े चले आते हैं और इस घाटी में प्रकाश स्रोतों के गिर्द आकर गिर जाते हैं। सुना है कि आदिवासी इन्हें इकट्ठा कर खा जाते हैं। अब सवाल यह है कि ये अद्भुत घटनायें एक छोटी सी जातिंगा-पट्टी में ही क्यों होती हैं। कई अनुसंधानकर्त्ताओं ने इस घटना का अध्ययन किया है और यह बताने की कोशिश की है कि किन्हीं विशेष स्थितियों में यह क्षेत्र इन पक्षियों के

लिए एक मरीचिका (mirage) जैसा बन जाता है जिससे विविध पक्षी आकर्षित हुए बिना नहीं रह पाते। सच तो यह है कि बरसों के वैज्ञानिक अध्ययनों के बावजूद यह रहस्य समझ में नहीं आ पा रहा। और हाँ, ऐसा ही दुनिया के कुछ अन्य स्थानों में भी घटित होता है।

समुद्रों में अनेक पक्षियों को लाईट हाउस से टकराते तो कई लोगों ने देखा है। यदि आप की ख़ास राय हो तो बताइए न कि ऐसा क्यों होता है?

• **प्रश्न 15 :** यदि आपका कोई मित्र या सहयोगी कुछ समय से अवसादग्रस्त है तो इस डिप्रेशन से उसे बाहर निकालने के लिए आप उसकी क्या मदद करेंगे?

• **उत्तर :** पहले तो हम बड़े प्यार से उसे समझायेंगे कि वह ठीक से खाये, सोये व ठीक ही सोचा करे। निगेटिव सोच या वहम उसके लिए ठीक नहीं। वह अपना पर्याप्त समय मित्रों-परिवारजनों के बीच बिताए, उनसे दिल खोल कर अपनी फ़ीलिंग्स शेयर करे और अकेला अलग-अलग रहना बंद करे। साथ ही वह अपनी पसंद की गतिविधियों-हॉबीज़ के लिए ज़्यादा समय दे व ज़िंदगी में अगर उसने बहुत बड़े लक्ष्य रखे हैं तो उन पर फिर से सोच कर उन्हें प्रैक्टिकल स्तर पर लाये। यदि उसका अवसाद बढ़ चुका है तो साइकोथिरेपिस्ट या साइकियाट्रिस्ट की मदद से उसकी

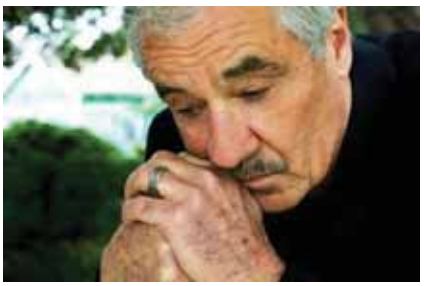

चिकित्सा करवायें। यह देखें कि मरीज़ डॉक्टर के अनुसार नियम से दवा आदि ले क्योंकि इन दवाओं का असर दिखने में महीने-दो-महीने का समय लग ही जाता है। अब जब मरीज़ खूब बेहतर महसूस करे तब भी एंटी-डिप्रेसेंट दवायें डॉक्टरी सलाह के मुताबिक चालू रखें। और हाँ, गंभीर अवसाद में कभी-कभार मैग्नेटिक या फिर इलेक्ट्रो-कनवल्सिव थिरेपी यानी बिजली के झटके तक की भी आवश्यकता होती है तो उसे भी स्वीकारें। किसी भी स्थिति में ईलाज बीच में न छोड़ें और साल-दो-साल लगे तो भी पूरा ईलाज करें। पूरा ईलाज करेंगे तो पूरी तरह ठीक हो जायेंगे आपके मित्र, यह विज्ञान का वादा है।

• **प्रश्न 16 :** जून 2012 में चीन ने शेंजाऊ अंतरिक्षयान में दो पुरुष यात्रियों समेत अपनी पहली महिला अंतरिक्षयात्री लिऊ यांग को भेज खूब नाम कमाया। परंतु अख़बारों में इन अंतरिक्षयात्रियों के लिए विशेष रूप से तैयार भोजन की बहुत ज़्यादा चर्चा रही। तो क्या थीं इस भोजन की विशेषतायें, बताइऐ न?

• **उत्तर :** एक तो यह कि इस भोजन में शाकाहारी हिस्सा ज़्यादा था। दूसरी बात, यह भोजन 100% शुद्ध यानी विशेष फ़ार्मों पर तैयार गैरप्रदूषित, गैरमिलावटी ऑर्गेनिक फूड था। इस फूड में कोई बाज़ारी खाद्य शामिल नहीं था।

और अब अंतिम प्रश्न में दिवंगत सुपर-अंतरिक्षयात्री नील आर्मस्ट्रॉंग को प्यार से श्रद्धाँजलि देते हुए हँसी का जश्न.....

• **राम :** (दोस्त से) : ठीक है श्याम, 20 जुलाई 1969 के दिन नील आर्मस्ट्रॉंग ने चंद्रमा पर पहला कदम रखा। पर यह तो बता कि चंद्रमा पर दूसरा कदम किसने रखा था?

• **श्याम :** दूसरा कदम भी नील ने ही रखा था, और क्या!!

संपर्क सूत्र :
डॉ. देवकी नंदन, बी-707, प्रगति अपार्टमेंट्स, प्लॉट नं. 5 सी, सेक्टर-11, द्वारका, नई दिल्ली-110 075